"ॐ"

वर्तमान महाभारी महाभारत लड़ाई

(THIS PREORDAINED WAR OF MAHABHARATA)

और

उनका परिणाम.

[भाग १६]

डिवाईन शेवा में,
अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता,
डिवाईन फ़ादर गीता आधार,
प्रजापति "ब्रह्मा कुमारियां."

2ND JULY 1942.

पी, ओ, बाक्स, ३८१.
कराची.

चार युगों और चार वर्णों वाला अनादि वैराट फ़िल्म,
जिसको फिरने में कल्प अथवा पाञ्च हज़ार वर्ष लगते हैं.

कलियुग (तमो प्रधान)
शूद्र घराणा
आसुरी राज्य
(DEVIL WORLD)

द्वापुर (रजो प्रधान)
वैश्य घराणा
आसुरी राज्य

सतियुग (सतो प्रधान)
ब्रह्मण घराणा
दैवी राज्य
(ANGELIC WORLD)

त्रेता (सतोगुण)
क्षत्री घराणा
दैवी राज्य

"वर्तमान दुनिया की लड़ाई (PRESENT WORLD WAR) को,
महाभारी महाभारत लड़ाई कहा जाता है."

यह वर्ल्ड वार (WORLD WAR) सन्धापि साइन्स घमंडी यूरप-वासी यादवों से प्रारम्भ हुई है, तथापि इसका हर्ता कर्ता (BACKBONE) अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, डिवाईन फादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा है, (न कि कलंगीधर कृष्ण) जो अपने डिवाईन वंश सहित इस कुरुक्षेत्र (WORLD) पर भारत लड़ाई में कलजुग सन्धी आसुरी सम्प्रदाय में जन्म धारण कर अनेक जन्मों के अंत के जन्म के भी अंत में, वैराट फ़िल्म के कायदे (PLAN) अनुसार अनायास ही प्रत्यक्षता (SELF REALISATION) को प्राप्त हो अविनाशी ज्ञान यज्ञ रचकर, उनसे महान् प्रज्वलित हुई महाभारत युद्ध रूपी ज्वाला द्वारा, छपन क्रोर (56 CRORES) साइन्स घमंडी यूरपवासी यादव और ९८ अक्षौहिणी (कई क्रोर) अज्ञानी अन्धे (UNDIVINE SELF UNREALISED) भारतवासी कौरव आसुरी सम्प्रदाय और अनेक अधर्मों के विनाश अर्थ तथा एक आदि सनातन "अहम ब्रह्मास्मि" धर्म अर्थात् सुख शान्ति मय राज्य (SUPREME PEACE, LAW & ORDER) स्थापन अर्थ अथवा दैवी घराणा (ANGELIC DYNASTY) स्थापन अर्थ कल्प कल्प के अंत और आदि के संगम (JUNCTION) पर निमित बनता है. इसही कारण इस दुनिया की लड़ाई (WORLD WAR) को "महाभारत युद्ध" के नाम से गाया जाता है.

यह अति गुह्य और गोपनिय रहस्य कल्प अथवा पाञ्च हज़ार वर्ष पहले गाई हुई गीता तथा भागवत में समाया हुवा है, जो सिर्फ़ दिव्य चक्षु द्वारा साक्षात्कार किया जा सक्ता है.

डिवाईन सेवा में,
अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता,
डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति "ब्रह्मा कुमारियाँ."

चार युगों और चार वर्णों वाला अनादि बेराट फ़िल्म,
जिसका फ़्रेंज़ी तक्ता अधूरा।
पाञ्च हज़ार वर्ष लगते हैं.

कलियुग (तमो प्रधान)
शूद्र घराणा
आसुरी राज्य
(DEVIL WORLD)

द्वापुर (रजो प्रधान)
वैश्य घराणा
आसुरी राज्य

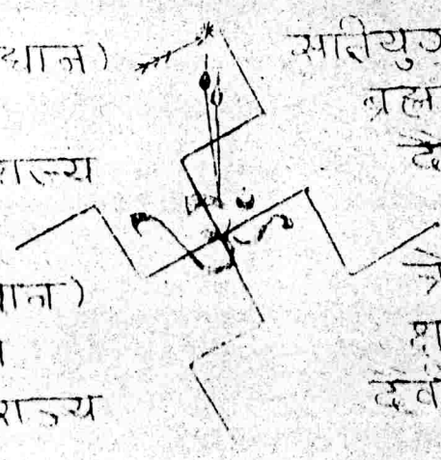

सतियुग (सतो प्रधान)
ब्रह्मण घराणा
देवी राज्य
(ANGELIC WORLD)

त्रेता (सतो गुण)
क्षत्रिय घराणा
देवी राज्य

इस कुरुक्षेत्र (वर्ल्ड WORLD) पर, द्वापुर से लेकर कलियुग के अन्त तक, जो अनेक प्रकार की लड़ाइयां हो चुकी हैं, उन सभ लड़ाईयों के अन्त की यह महाभारी महाभारत की लड़ाई है, जो कल्प कल्प अथवा पाञ्च पाञ्च हज़ार वर्ष बाद अनादि बने बनाये बेराट फ़िल्म के कायदे (PLAN) अनुसार अनायास ही कलियुग के अन्त और सतियुग के आदि के संगम (JUNCTION) पर रिपीट (REPEAT) होती ही रहती है.

इसका परिणाम क्या होगा ?

अधर्म का विनाश और एक आदि सनातन "अहम्, ब्रह्म, अस्मि" धर्म की स्थापना.

दुनिया के हथ्यारों और घरू झगड़ों की लड़ाईयों (वर्ल्ड आर्ममेन्ट्स ऐन्ड् वर्ल्ड सिविल वार्स (WORLD ARMAMENTS AND WORLD CIVIL WARS) और अनेक प्रकार की कुदरती विपत्तियों (CALAMITIES) द्वारा सायन्स घमंडी यूरपवासी यादव और भारतवासी कंस, जरासंधी कौरव (CONGRESS) और उन्हों के साथी वेदवादी विद्वान, पण्डित, आचार्य्य, गुरू गोसाईं, मुल्ले, काज़ी, पोप, पादरी आदि और उन्हों की सामग्री वेद, शास्त्र, ग्रन्थ, कुरान, बाईबुल आदि, और मंदिर, टिकाणे, मस्जिद, गिरजायें इत्यादि सभ के सभ विनाश को प्राप्त होने वाले हैं.

"बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहि."

और उन्हों की सामग्री
और मंदिर, टिकाणे, मस्जिद, गिरजायें इत्यादि सभ के स
विनाश को प्राप्त होने वाले हैं.
"बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहि."

BELIEVE IT OR NOT BUT THAT IS TRUE.

दिवाईन ओवा में,
"प्रजापति ब्रह्मा कुमारियां."

13TH JULY 1942.
NO. 156.

P.O.BOX 381,
KARACHI.

" मिलटरी मार्शल्स और कमान्डर्स के लिये आकाशवाणी."

दिव्य दृष्टि द्वारा देखा और अनुभव किया गया है कि, अनादि बने बनाये वैराट फ़िल्म के कायदे (PLAN) अनुसार कलियुग की अन्त और सतियुग के आदि का संगम (JUNCTION) होने कारण बहुत लड़ाईयों के इस अन्त की महाभारी महाभारत लड़ाई (THIS LAST AND THE GREATEST WORLD WAR) द्वारा, इस कुरुक्षेत्र (WORLD) पर से, धर्म ग्लानि और अधर्म (IRRELIGIOUSNESS AND UNRIGHTEOUSNESS) का विनाश SCORCH THE EARTH POLICY द्वारा सायन्स - घमंडी यूरपवासी यादवों के हथियारों (ARMAMENTS) के ज़रीये अवश्य होना है. यह कार्य (TASK) कायदे (PLAN) अनुसार मिलटरी मार्शल्स और कमान्डर्स के हाथों में सौंपा गया है, इस कारण CIVILIAN LAW IS TO ABDICATE ENTIRELY IN FAVOUR OF MARTIAL LAW इस कुरुक्षेत्र पर से पूर्ण सफ़ाई होने बाद दैवी - घराणे (ANGELIC DYNASTY) का पूर्ण सुख शान्ति मय राज्य (SUPREME PEACE, LAW & ORDER) आरम्भ होगा, जिसकी स्थापना अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा और उनकी डिवाईन वंश द्वारा हो चुकी है.

डिवाईन सेवा में,
अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता,
डिवाईन फ़ादर गीता आथर,
"प्रजापति ब्रह्मा कुमारियां."

25TH JULY 1942.
NO. 157.

P.O.Box 381,
KARACHI.

"सन्यासियों के लिये आकाशवाणी."

जैसे कोई मनुष्य बाह्यविद्या (EXTERNAL KNOWLEDGE) में छोटे दर्जे की परीक्षा पास कर, शरीर निर्वाह अर्थ नौकरी में लग जाता है परन्तु, साथ साथ बड़े दर्जे की परीक्षा पास करने की जिज्ञासा (AMBITION) होने के कारण, अपने ही मकान में अभ्यास कर तैयार हो, आवश्यकता कुछ समय के लिये ऊंच यूनिवर्सिटी में दाखिल हो, बड़ी परीक्षा पास कर ऊंच मर्तबा प्राप्त कर सकता है.

वैसे "अहम् ब्रह्म" निश्चय बुद्धियोग की परीक्षा पास किया हुवा कोई हठयोग कर्म सन्यासी जन्म जन्मान्तर "कर्म सन्यास" घराणे में आवागमन का अधिकारी बना हुवा, यदि ब्रह्मविद्या (INTERNAL KNOWLEDGE) "अहम्ब्रह्म, आत्म" निश्चय बुद्धि सहज और राजयोग, निष्काम कर्मयोग सन्यासी की बड़े में बड़ी परीक्षा पास कर जन्म जन्मान्तर निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, अविनाशी ज्ञान का तीसरा नेत्र खुले हुवे छत्रपति देवी देवता घराणे में आवागमन का अधिकारी बनना चाहे, तो इन भेजे हुवे अविनाशी ज्ञान रत्नों को एकान्त में खूब ग़ौर से अभ्यास कर तैयार हो, अविनाशी ज्ञान यज्ञ में दाखिल होकर, महारथी पाण्डवों द्वारा यह परीक्षा पास कर, सर्वोत्तम (THE HIGHEST) "जीवन मुक्ति" का मर्तबा प्राप्त कर सकता है, परन्तु अभी नहीं तो कदाचित नहीं (NOW OR NEVER).

कारण क्या है कि,

द्वापर से लेकर कलियुग के अंत तक, जो अविनाशी ज्ञान प्रायलोप हो जाता है, वह डिवाईन फ़ादर प्रजापति ब्रह्मा अपने डिवाईन वंश सहित, बहुत जन्मों के अंत के जन्म की भी अंत होने कारण, भारतखण्ड में कंस, जरासंधी आदि आसुरी सम्प्रदाय में RE-INCARNATE कर अनायास ही "अहम्, ब्रह्म, आत्म निश्चय बुद्धि हो, अविनाशी ज्ञान यज्ञ रचकर, अपने मुख द्वारा ब्राह्मण, क्षत्री घराणों की पुनः स्थापना (RE-ESTABLISHMENT) अर्थ वैराट फ़िल्म अनुसार निमित बनता है.

कल्प अथवा पांच हज़ार वर्ष पहले भी कलियुग की अंत और सतियुग के आदि के संगम (JUNCTION) पर, इस ही महाभारी महाभारत लड़ाई (WORLD WAR) के समय विद्वान, पण्डित, आचार्य्य, ब्रह्मचारी आदि जो संशय आत्मिक बुद्धि (SELF-UNREALISED) आसुरी कौरव (CONGRESS) सम्प्रदाय का मुफ़्त अन्न खाने कारण उन्हों के साथी बन पड़े थे, उन्हों को प्रजापति ब्रह्मा के डिवाईन वंश अविनाशी ज्ञान बाणों से "मन्मना भव, मद्याजी भव" बुद्धियोग की परीक्षा पास कराकर आप समान बनाया था.

डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा की कल्प पहले गायी हुई गीता में "मन्मना भव, मद्याजी भव" के अविनाशी ज्ञान युद्ध का वर्णन है, न कि कोई हिंसक युद्ध का.

डिवाईन शेवा में, अविनाशी ज्ञान दाता,

दिव्य चक्षु विधाता डिवाईन फादर गीता आथर "प्रजापति ब्रह्मा कुमारि

"अविनाशी ज्ञान यज्ञ भवन में दो ब्रह्माकुमारियों की, आपस में गुह्य ज्ञान चर्चा."

ब्रह्मा कुमारी सावित्री :- प्राण सखी, दिव्य दृष्टी द्वारा प्राप्त किये अनुभव और शास्त्र सिद्धान्त सहित आप बतावेंगी कि, ये छत्रपति देवी देवता सम्प्रदाय जो मन्दिरों में पूजन, वंदन किये जाते हैं और जो इस ही कुरुक्षेत्र (WORLD) पर सतियुग और त्रेता के समय पचीस सौ (2500) वर्ष सुख और शान्तिमय अटल, अखण्ड राज्य कर गये हैं, वह दैवी राज्य घराणा (ANGELIC RULING DYNASTY) किसने स्थापन किया, कब और कैसे ?

ब्रह्मा कुमारी निर्मला :- प्राण सखी, लोक कल्याण अर्थ तेरे प्रति सुनाती हुं, सावधान होकर सुनो :-

आज से कल्प अथवा पाञ्च हज़ार वर्ष पहले कलियुग के अंत और सतियुग के आदि के संगम (JUNCTION) के समय जब कुरुक्षेत्र (WORLD) पर अति धर्म ग्लानि और अधर्म की वृद्धि थी, तब अनायास ही वैराट फ़िल्म अनुसार अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा (न कि कलंगीधर कृष्ण) अपने डिवाईन वंश सहित प्रत्यक्षता SELF REALISATION को प्राप्त होकर अविनाशी गीता ज्ञान यज्ञ रच "अहम ब्रह्मास्मि" निश्चय बुद्धि अथवा "मन मना भव, मच्चाजी भव" की युक्ति द्वारा सर्व गुण सम्पन्न निर्विकारी जीवन मुक्त बनाय दैवी घराणा (ANGELIC DYNASTY) स्थापन किया था, जिस घराणे ने सतियुग और त्रेता का सारा समय पचीस सौ (2500) वर्ष जन्म जन्मान्तर सुख शान्तिमय अटल, अखण्ड राज्य किया है और इस के बाद भी द्वापुर से लेकर कलियुग के अंत तक इस घराणे की कीर्ति और यश गाया जाता है और वे मन्दिरों में पूजन, वंदन किये जाते हैं.

अहा! एक अविनाशी ज्ञान धन दान, जिससे ऊपर दिखलाया हुवा जन्म जन्मान्तर के लिये अटल, अखण्ड राज्य प्राप्त होता है और दूसरा अनेक प्रकार का विनाशी स्थूल (EXTERNAL) धन दान, जिन से द्वापुर और कलियुग के समय एक ही जन्म में अल्पकाल के लिये तुच्छ, क्षण भङ्गुर सुख की राजाई प्राप्त होती है, जो भोगने के बाद फ़िर जन्म जन्मान्तर आवागमन के कर्म बन्धन में फ़ंसकर आदि, मध्य, अन्त दुख भोगते हैं. अहा! कितना रात और दिन का तफ़ावत (CONTRAST)!

इस ही कारण डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा स्पष्ट कहता है कि, अविनाशी ज्ञान धन जैसा उत्तम दान अन्य कोई भी नहीं. यह भी प्रत्यक्ष देखा जाता है कि, अविनाशी ज्ञान धन वाले सिरताजों के सामने विनाशी धन वाले महताज सर्वदा सिर झुकाते और प्रार्थना करते ही रहते हैं.

ब्र. कु. सावित्री :- अहा! इस अविनाशी गीता ज्ञान का कितना महात्म्य, जिस ही द्वारा जीवन मुक्त बन कर जन्म जन्मान्तर ब्रह्मपुरी (ANGELIC WORLD) का

अटल, अखण्ड राज्य प्राप्त होता है.

ब्र. कु. निर्मला:- सत्य है सखी, परन्तु सिर्फ़ इस ही कल्प के अन्त और आदि के संगम (JUNCTION) समय अविनाशी गीता ज्ञान की जोहरदार (तेज़) तलवार से इस दैवी राज्य घराणे के स्थापना अर्थ पिता श्री प्रजापति ब्रह्मा, अपने डिवाईन वंश सहित निमित्त बनता है.

तैराट फ़िल्म के कायदे अनुसार यह घराणा वृद्धि पाय फ़िर त्रेता के अन्त में जर्जरीभूत अवस्था को प्राप्त हो जाता है, और साथ साथ गीता ज्ञान तलवार का जोहर (तेज़) भी प्रायलोप हो जाता है अर्थात् द्वापुर से लेकर कलियुग के अन्त तक "अहम् ब्रह्मास्मि" बुद्धियोग अथवा "मन्मना भव, मध्याजी भव" का ज्ञान प्रायलोप हो जाता है, जो फ़िर इस संगम (JUNCTION) के समय हूबहू PRACTICAL में पुन: (REPEAT) हो रहा है. पिता श्री गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा अपने डिवाईन वंश के प्रति स्पष्ट कहता है कि, हे वत्स, हम, तुम और ये नास्तिक संशय आत्मिक बुद्धि UNDIVINE, SELF-UNIQUALIZED यूनिवर्सी साइन्स घराणे। यादव सम्प्रदाय और भारतवासी राजे, रजवाड़े, कौरव (कांग्रेस) और उन्हों के साथी विद्वान, पण्डित, आचार्य इत्यादि आसुरी सम्प्रदाय (DEVILISH ORGANISAT और जो कुछ भी इस समय दृष्यमान है, वे सब कल्प पहले भी थे, अब भी हैं और कल्प बाद फ़िर (REPEAT) होंगे.

ब्र. कु. सावित्री:- तो क्या, ये शंकराचार्य्य, वल्लभाचार्य्य, रामानुज, राजाराम, ज्ञानेश्वर तिलक आदि ने, जो गीता और तलवार का प्रयोग किया, कराया है उसमें कोई तेज़ नहीं था?

ब्र. कु. निर्मला:- बहिन बिल्कुल नहीं, इन सभी ने विनाशी ज्ञान तलवार चलाई है. वास्तव में स्थूल यज्ञ, तप, व्रत नियम, प्रार्थना, सन्ध्या, गायत्री, पितर पूजा इत्यादि कर्मकाण्ड करने कराने वाले नास्तकों अथवा विषय ज़हर पीने पिलाने वाले पतितों को किसी प्रकार के व्याख्यान देने वा वेद शास्त्र, ग्रन्थ, बाईबुल इत्यादि सुनाने वा उनपर टीका करने का कोई अधिकार ही नहीं, क्योंकि ये वेदवादी विद्वान, पण्डित, आचार्य, गीता, भागवत आदि को नावल की सूरत में सुनाकर मनुष्य मात्र को संशय आत्मिक बुद्धि नास्तक, विकारी बंदर बनाकर खुद अपने वंश और शिष्यों सहित जन्म जन्मान्तर अज्ञान अन्धयारे में ठोकरें खाते खाते और भिन्न भिन्न नाम, रूप धारण करते करते इस समय महाभारत की महाभारी लड़ाई में, ये कौरव (कॉंग्रेस) सेना में विनाश होने के लिये शामिल हैं. इसी कारण डिवाईन फ़ादर प्रजापति ब्रह्मा कहता है कि हे वत्स, ऐसे नास्तक, पतित माता पिता, बहिन भाई, सासु ससु गुरु गोसांई आदि कौरवों का संग तोड़ "मन्मना भव, मध्याजी भव" हो, तबही ब्रह्मपुरी जो स्थापन हो रही है, उसका अटल, अखण्ड पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करेंगा.

ब्र. कु. सावित्री:- बहिन, ये गीता, कुरान, बाईबुल, ग्रन्थ इत्यादि के वादी, अपने शास्त्र रचने वाले डिवाईन फ़ादर और उनके डिवाईन वंश के प्रत्यक्षता का रहस्य, उनकी शक्ति, उनके दैवी कर्तव्य और उनके पुनर्जन्म तक को ही नहीं जानते और न किये भी जानते कि, उन डिवाईन फ़ादर्स के घराणे कैसे स्थापन हुवे हैं, फ़िर वृद्धि पाय समय पर कैसे विनाश हुवे हैं.

ब्रह्माकुमारी निर्मला:- सखी वास्तव में यह सारा गुप्त रहस्य सर्व शास्त्रमय गीता में ही समाया हुआ है, परन्तु बिगर दिव्य दृष्टी कोई भी साक्षात्कार नहीं कर सका.

डिवाईन शेवा में "प्रजापति ब्रह्मा कुमारियां."

P.O.Box 381,
KARACHI.

24TH FEBRUARY 1942.

No. 18.

अर्ध रात्री अथवा ब्रह्म मुहूर्त के समय, अविनाशी ज्ञान यज्ञ भवन में दो महारथी ब्रह्मा कुमारियां अपनी छावनी पर चौकी दे रही है और नीचे प्रमाण आपस में गुह्य ज्ञान चर्चा चला रही है:-

ब्रह्मा कुमारी सुंदरी:- प्रिय सखी, आज बृटिश सर्कार ने घोषणा की है कि, हरएक नर और नारी अपने अपने धर्म स्थान मंदिर, टिकाणे, मस्जिद, गिरजा इत्यादि में विजय (VICTORY) अर्थ प्रार्थना करे, परन्तु प्रश्न उठता है कि किसको प्रार्थना करे, निराकार परमात्मा को वा पूर्व (PAST) साकार पैगम्बरों (DIVINE FATHERS) को ?

ब्रह्मा कुमारी मीरां:- सखी, विचार की बात है कि, निराकार परमात्मा को तो आकार अथवा शरीर ही नहीं, तो सुने और पधारे कैसे ? हां, बाकी साकार अथवा शरीर धारी मनुष्य स्वरूप में पैगम्बर (DIVINE FATHER) इस कुरुक्षेत्र (WORLD) पर भिन्न भिन्न नाम रूप और देश में अपने अपने समय पर अपनी अपनी शक्ति अनुसार अपना अपना घराणा स्थापन करने अर्थ निमित्त बनते आये हैं.

ब्रह्मा कुमारी सुंदरी:- इन पैगम्बरों (DIVINE FATHERS) और उनके डिवाईन वंश (DIVINE ONES) का जन्म आसुरी सम्प्रदाय में ही होता है, जहां अनायास ही आत्म साक्षात्कार (SELF REALISED) करने बाद उन्हों को संशय आत्मिक बुद्धि (SELF UNREALISED) मनुष्य सम्प्रदाय से अनेक प्रकार के सितम (TORTURES) सहन करने पड़ते हैं, अंत में अपने घराणे स्थापन करने अर्थ निमित बन जन्म जन्मान्तर गाये जाते हैं. देखो सखी, कैसा गुह्य रहस्य है.

ब्रह्मा कुमारी मीरां:- मूढ़, वेद, शास्त्र, कुरान, बाईबुल, ग्रन्थ वादी समझते हैं कि, हरएक पैगम्बर (DIVINE FATHER) अपना अपना घराणा स्थापन कर ज्योति ज्योत में लीन हो जाता है, परन्तु दिव्य दृष्टी द्वारा प्राप्त किया हुवा अनुभव और शास्त्र सिद्धान्त कहता है कि, हरएक पैगम्बर (DIVINE FATHER) अपनी डिवाईन वंश सहित पुनर्जन्म धारण कर स्थापन किये हुवे घराणे की वृद्धि अर्थ निमित बनता रहता है.

ब्र.कु. सुंदरी:- इस समय हरएक मुज़हब वाले इस्लामी, बोधी, कृश्चन इत्यादि, जो इस महाभारी महाभारत लड़ाई की विपत्ति में फ़ंसे हुवे हैं वे अपने अपने घराणे की विजय (VICTORY) अर्थ अपने अपने पैगम्बर (DIVINE FATHER) को सहायता के लिये अवश्य प्रार्थना करते होंगे ?

ब्र.कु. मीरां:- हां सखी, करते तो ऐसे ही हैं परन्तु अब आवेगा तो वही जिसका समय (TURN) होगा, इकट्ठे कैसे आ सकेंगे.

ब्र.कु. सुंदरी:- प्रिय सखी, भला ये अपने को हिन्दु कहिलाने वाली कौम सहायता अर्थ किस पैगम्बर (DIVINE FATHER) को प्रार्थना करती होगी?

ब्र.कु. मीरां:- इस रंग बरंगी नास्तक हिन्दु गुलाम कौम की तो बात ही

मत पूछो. वास्तव में शास्त्रों में तो "हिन्दू" कोई धर्म ही नहीं. वे अपने पैग़म्बर (DIVINE FATHER) के नाम निशान तक को भी नहीं जानते. उन्हों में भी मुख्य जो अपने को "ब्राह्मण" कहलाते हैं और कहते हैं कि, हम प्रजापति ब्रह्मा के मुख द्वारा प्रगट हुवे हैं, उन्हों को इतना भी पता नहीं कि, डिवाईन फ़ादर प्रजापति ब्रह्मा कब, कहां और कैसे प्रत्यक्ष हुवा था. इस हिन्दु कौम को न अपने धर्म का पता है और न उन्हों का कोई एक भगवान में ही विश्वास है, ये जिसको आज स्मरे और पूजे फ़िर कल उसका ही अपमान (INSULT) करे और उसको ही ठोकर मारे.

"अब तो इस पर एक अनुभवी भजन सुनाती हुं."

TUNE OF RECORD
No. 15633 H.M.V.

अहम् ब्रह्म सदा सो ईश्वर, जिससे फ़िरता माया मम चक्कर,
भूला मानुष निज मंदिर, जहां आत्मा विराजे अति सुंदर,
अहम् रथ पर हो स्वार, आये मम बैराट संसार,
एक कौतुक देखा यहां आकर, क्या कौतुक देखा यहां आकर.
देवी की सजाय मूर्ति / देवता की सजाय मूर्ति, तोड़ फ़ोर एक पत्थर, तोड़ फ़ोर एक पत्थर,
भेट भोग रख डाल सामने, भेट भोग रख डाल सामने,
देवी को दिखला कर कहते, खाजा, खाजा, खाजा.
भेट भोग सब हप कर खाते, पिण्डे कुटम्ब बिठाकर कहते, दक्षिणा, दक्षिणा, दक्षिणा.
प्रेम भाव से पूज देवी को, प्रेम भाव से पूज देवता को,
फ़िर फ़ैंक के समुद्र में जाकर कहते, डुबजा, डुबजा, डुबजा.

ब्र. कु. सुंदरी :- प्रान सखी, भला ये तो बतावो कि मौत से अथवा काल से अथवा शरीर छोड़ने से मनुष्य डरते क्यों? देखिये तो, इस महा-भारत लड़ाई (WORLD WAR) की भयता से जान और माल बचाने अर्थ कैसे इधर उधर दौड़ा दौड़ी करते हैं.

ब्र. कु. मीरां :- सखी तुम स्वयम् जानती हो, इसका यही एक मुख्य कारण संशय "अहम् ब्रह्म अस्मि" बुद्धि (SELF UNREALISATION) अथवा नास्तक प वास्तव में "अहम आत्मा" के लिये "मम माया" अथवा स्थूल प्रकृति का बना हुवा शरीर छोड़ना और सेकंड में दूसरा धारण करना तो "स्वयम् भू" अथवा "छू मन्त्र," सो भी जर्जरीभूत अवस्था का शरीर छोड़, किशोर अवस्था शरीर धारण करने में तो फ़ायदा ही है, इस में घाटा ही क्या जो मूढ़ डरते हैं, हां अलबत संशय आत्मिक बुद्धि मनुष्य को आसुरी सम्प्रदाय में जन्म धारण करना पड़ता है और यह तो हम, तुमको अनुभव है कि, "मन मना भव, मन्मया जी भव के युद्ध की परीक्षा पास करने बाद कैसा सर्वगुण सम्पन्न, दिव्य प्रकाशमय मोहनी किशोर

NO. 152.
16th June 1942.
AT 4-30 A.M.

पी. ओ. बाक्स, ३८१,
कराची.

DIVINE DECREE.

कल्प कल्प अथवा पाञ्च पाञ्च हजार वर्ष बाद अनायास ही फ़िरने वाले वैराट बाईस्कोप में दो प्रकार की युद्ध गाई गई है. एक है INTERNAL अहिंसक "धर्म युद्ध" (HOLY WAR) जो DIVINE, SELF-REALISED बेहद के बादशाह डिवाईन फ़ादर्स के गीता, कुरान, बाईबुल आदि शास्त्रों में गाई हुई है और दूसरी है EXTERNAL अनेक प्रकार की हिंसक अधर्म युद्ध UNHOLY WAR जो UNDIVINE, SELF-UNREALISED हद के बादशाहों के हिस्ट्री, जाग्राफ़ी में गाई हुई है.

इस आते धर्म ग्लानि और अधर्म के वृद्धि समय हरएक मुज़हब के नेता गुरु, गोसाईं, मुल्ला काज़ी, पोप पादरी इत्यादि अपने अपने मुजहब के राजे रजवाड़े, डिकटेटर्स, लीडर्स इत्यादि और प्रजा को हिंसक युद्ध लड़ने के लिये भड़काय रहे हैं. कहते हैं कि, हमारे PAST डिवाईन फ़ादर्स का यही फ़र्मान है कि, हरएक मनुष्य मात्र का धर्म के लिये युद्ध करना फ़र्ज़ है, परन्तु विनाश काले विपरीत बुद्धि होने के कारण इन UNDIVINE, SELF-UNREALISED नास्तक, कलियुगी गुरु गोसाईं, मुल्ला काज़ी, पोप पादरीयों ने "धर्म युद्ध" का अर्थ ही नहीं समझा है. इस ही कारण वे उल्टे हिंसक मार्ग बताकर राजा से रंक तक हरएक मनुष्य मात्र को संशय आत्मिक बुद्धि बनाकर अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा के रचे हुवे अविनाशी ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई महाभारत लड़ाई के आग में स्वाहा करा रहे हैं, जिस महाभारी महाभारत लड़ाई में विजय की चाबी (KEY OF VICTORY) वैराट (फ़िल्म के प्लैन अनुसार गुप्त परन्तु प्रख्यात (UNKNOWN BUT WELL-KNOWN) डिवाईन महारथी WARRIORS के हाथ में है.

वास्तव में कोई भी डिवाईन फ़ादर ने न कभी हिंसक युद्ध लड़ने के लिये भड़काया है, न कभी प्रार्थना करने, और न पाञ्च महाभूत (तत) परस्ती सिखलाय

दिव्य दृष्टी द्वारा प्राप्त किया हुवा अनुभव, शास्त्र सिद्धान्त और विवेक कहता है कि, हरएक डिवाईन फ़ादर, जैसे कि, डिवाईन फ़ादर गीता आथर प्रजापति ब्रह्मा (न कि श्री कृष्ण) कल्प के अंत और आदि के जंकशन् समय कुरुक्षेत्र (WORLD) पर प्रत्यक्षता को प्राप्त कर "अहम् ब्रह्मास्मि" आदि सनातन धर्म निश्चय बुद्धि करने कराने, निर्विकारी बनने बनाने, INDIVIDUAL "मन्मना भव, मच्चाजी भव" की युद्ध करने कराने सिखलाकर अपना घराणा स्थापन करने अर्थ अनायास ही निमित बना है. और उसके बाद भी जो जो डिवाईन फ़ादर्स कल्प के मध्य में अर्थात् द्वापुर से लेकर इस ही कुरुक्षेत्र (WORLD) पर प्रत्यक्षता को प्राप्त भये हैं, उन्होंने फ़िर "अहम् ब्रह्म" धर्म निश्चय की युद्ध करने कराने, निर्विकारी बनने बनाने अर्थ अपने अपने घराणे स्थापन करने लिये निमित बने हैं. इसके सिवाय न कोई और कुरुक्षेत्र (WORLD), न कोई और धर्म अथवा घराणा, वेद शास्त्र, गीता, कुरान, बाईबुल इत्यादि में गाया गया है. यही वैराट बाईस्कोप कल्प कल्प अनायास ही REPEAT होता रहता है.

डिवाईन शेता में, "ब्रह्मा कुमारियां."

25th June 1942.

पी, जो, नाकस, ३८१.
कराची.

चार युगों और चार वर्णों वाला अनादि चैराह फ़िल्म, जिसको फ़िरने में, कल्प अथवा पाञ्च हज़ार वर्ष लगते हैं.

कलियुग (तमो प्रधान)
शूद्र घराणा
आसुरी राज्य
(DEVIL WORLD)

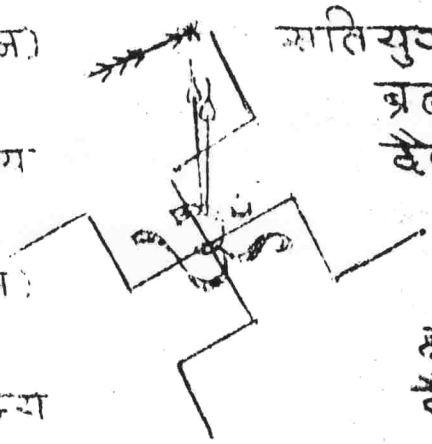

सतियुग (सतो प्रधान)
ब्रह्मण घराणा
दैवी राज्य
(ANGELIC WORLD)

द्वापुर (रजो प्रधान)
वैष्य घराणा
आसुरी राज्य

त्रेता (सतोगुण)
क्षत्री घराणा
दैवी राज्य

ब्रह्मा कुमारी गंगा :- सखी विनाश काले राजा से रंक तक मनुष्य मात्र की बुद्धि कैसी विपरीत होती है, उसका सबूत दिव्य दृष्टी मिलने बाद कैसा स्पष्ट दिखाई दे रहा है.

ब्रह्मा कुमारी जमुना :- प्रिय सखी, इसका रहस्य ज़रा खोल कर बताईये.

ब्रह्मा कुमारी गंगा :- सखी देखो, कुरुक्षेत्र (WORLD) पर इस अति धर्मग्लानि (UNRIGHTEOUSNESS) और अनेक प्रकार के अधर्मों (IRRELIGIONS) के वृद्धि के समय, जब कृष्ण की बीसमी सदी का सभ्य संसार माना जाता है. (SO-CALLED CHRISTIAN 20TH CENTURY) ऐसे समय के झूठे सभ्यता के घमंड में फ़से हुवे नास्तक, अज्ञानी (UNDIVINE) तथा संशय आत्मिक बुद्धि (SELF-UNREALISED) गुरु गोसाईं, मुल्ले काज़ी, पोप पादरी इत्यादि धार्मिक नेता और राजा, प्रजा आदि सब के सब निराकार ईश्वर तथा अपने पूर्वज (PAST) परम पिता पैग़म्बर (DIVINE FATHER) को साइन्स सभ्यता (SCIENCE CIVILIZATION) से प्रगटी हुई महाभारी हथ्यारों की लड़ाई (WORLD WAR) से विशेष करके (IN PARTICULAR) और कुदरती आफ़तों (NATURAL CALAMITIES) से सामान्य करके (IN GENERAL) बचाने के लिये और आतम साक्षात्कार (SELF REALISATION) की शक्ती द्वारा सुख शान्ति सम्पन्न राज्य (SUPREME PEACE, LAW & ORDER) की पुनः स्थापना (RE-ESTABLISHMENT) अर्थ प्रत्य होने के लिये अनेक प्रकार के नास्तकों के कर्मकाण्ड (ATHEISTIC ACTS) जैसे कि, प्रार्थना, यज्ञ, तप, वृत, नियम इत्यादि कर रहे हैं.

इससे साफ़ सिद्ध होता है कि, इस समय की साइन्स घमंडी (SCIENCE PROUD) मनुष्य सृष्टी सभ्य (CIVILIZED) नहीं है, क्योंकि सभ्यता (CIVILIZATION) सिर्फ़ आतम साक्षात्कार (SELF-REALISATION) द्वारा ही हो सक्ती है, जिसके लिये समय समय पर पैग़म्बरी पिता (DIVINE FATHER) की आवश्यक्ता रहती है. वे हरएक अपने

अपने समय पर आत्म साक्षात्कार (SELF-REALISATION) द्वारा चरणों स्थापन करता है, जो वृद्धि को प्राप्त कर बेशक फ़िल्म के कायदे (PLAN) अनुसार पुनः जर्जरीभूत हो जाता है अर्थात् UNCIVILIZED हो जाता है.

ब्रह्मा कुमारी जमुना :- प्रिय प्राण सखी, जब इस समय के मनुष्य मात्र सशय आत्मिक बुद्धि (SELF-UNREALISED) होने के कारण असभ्य (UNCIVILIZED) अथवा आसुरी मनुष्य सम्प्रदाय (DEVILISH HUMAN BEING) हैं, तो फ़िर इतने सभी ईश्वरीय और मायावी मर्तबों (DIVINE OR UNDIVINE TITLES के पूंछ, जैसे कि, श्री श्री १०८ स्वामी, ईश्वर भगवान (LORD) श्री मान श्री युत (HIS HOLINESS) महात्मा, साधु, संत (SAINT) विद्वान, आचार्य्य, पण्डित, ज्ञानी, ध्यानी इत्यादि धार्मिक मर्तबों की उपाधियां, शाहेजहान और शाहेज़ादा K.C.I.E., C.I.E., नाईट बहादुर, राय बहादुर, खानबहादुर इत्यादि मायावी लकब अनेक, अपने नामों के पिछाड़ी क्यों चटकाये रखे हैं.

ब्रह्मा कुमारी गंगा :- प्रान सखी, आसुरी सम्प्रदाय (DEVILISH HUMAN BEINGS) को बंदरों से मुशाबत दी जाती है, इसी लिये उन्हों को माया में नाचने अर्थ ये पूंछ हैं और इन आसुरी सम्प्रदाय की शादी भी बंदरों वत् सिर्फ़ संसार में विषय सागर में गोते खाने अर्थ की जाती हैं. ऐसे आत्म घात के दलालों का धन्धा इस समय के विनाशकाले विपरीत बुद्धि वाले नास्तक अज्ञानी, संशय आत्मिक बुद्धि (UNDIVINE & SELF-UNREALISED) गुरु गोसाईं, मुल्ले काज़ी, पोप पादरी इत्यादि कहने मात्र धार्मिक नेता अपने अपने धर्म स्थानों, जैसे कि मंदिर, टिकाणे, मस्जिद गिरजा रूपी अड्डों में करते हैं, ये सभी इस महाभारत युद्ध (WORLD WAR) BY SCORCH THE EARTH POLICY द्वारा अवश्य ही विनाश को प्राप्त होने हैं, जैसे कल्प अथवा पाञ्च हज़ार (5000) वर्ष पहले हुवे थे, और फ़िर कल्प बाद हूबहू इसी प्रकार से पुनः प्रगट होकर विनाश को प्राप्त होंगे. अथवा REPEAT होंगे.

ब्रह्मा कुमारी जमुना :- सत्य कहती हो, प्राण सखी, दैवी संसार सुख शान्ति राज्य THE WORLD OF SUPREME PEACE, LAW & ORDER जो अविनाशी ज्ञान यज्ञ द्वारा स्थापन हो रहा है, उसमें मनुष्य मात्र को कोई भी मर्तबे (TITLE) की आवश्यक्ता नहीं रहती, क्योंकि उस समय मनुष्य मात्र को "अहम ब्रह्मास्मि" सर्वोत्तम मर्तबा (HIGHEST TITLE) सुतह सिद्ध प्राप्त है. जब मनुष्य मात्र इस सुतह सिद्ध प्राप्त महान् उंच मर्तबे (TITLE) "अहम ब्रह्मास्मि" को भूल जाते हैं, तब ही असभ्य (UNCIVILIZED) अथवा आसुरी स्वभाव वाले बन मायावी झूठे मर्तबों (TITLES) के पिछाड़ी दौड़ा दौड़ी करते हैं.

ब्रह्मा कुमारी गंगा :- अहा! कैसा आश्चर्य!

ब्रह्मा कुमारी जमुना :- सखी, इससे भी बड़े आश्चर्य की बात तो यही है कि, इस अति धर्म ग्लानि के समय मनुष्य मात्र को पता ही नहीं है कि, इस "अहम ब्रह्मास्मि" ज्ञान का मर्तबा क्या है और इस "अहम ब्रह्मास्मि" के निश्चय से कैसे जन्म जन्मान्तर के लिये ब्रह्मपुरी (ANGELIC WORLD) की अटल बादशाही प्राप्त की जाती है. इस रहस्य को जानना ही वास्तव ज्ञान है, बाकी सब है अज्ञान.

डिवाईन शेवा में "प्रजापति ब्रह्मा कुमारियां"

शरीर प्राप्त होता है, सो भी दैवी वाणी में. यह रहस्य प्रजापति ब्रह्मा के जीवन चरित्र भागवत में भली प्रकार से गाया हुवा है, जिस रहस्य को दिव्य चक्षु प्राप्त किये हुवे हम तुम प्रजापति ब्रह्मा की दैवी वंश ही जानती है अन्य बिचारे वेदवादी उल्लू, अन्धे क्या जाने, वे तो अर्थ (RIGHT) को अनर्थ (WRONG) कर रहे हैं, जैसे किसी मनुष्य ने अद्वैत रामायण" शास्त्र के अर्थ (RIGHT) का अनर्थ (WRONG) कर एक" रामायण" नामक मनोमय (IMAGINARY) उपन्यास, (NOVEL) छंद, दोहिरा, चौपाई आदि पुष्पकवाणी में रच, मनुष्य मात्र को सुनाकर संशय आत्मिक बुद्धि बनाय रखा है. मंद बुद्धि नालायक सुनाते हैं कि, त्रेतायुग के निर्विकारी सर्वगुण सम्पन्न राजा श्री रामचन्द्र की धर्म पत्नि श्री सीता जी को एक रावण नामक दैत्य हरण (ABDUCT) कर गया. कैसी मिथ्या बकवाद और सफ़ेद झूट. वैसे ही सतियुग के निर्विकारी सर्वगुण सम्पन्न राजा श्री कृष्ण चन्द्र के लिये बकते हैं कि, कन्याओं को हरण किया अथवा अकासुर, बकासुर, पूतना, कंस और जरासंधी आदि दैत्यों को मारा, कैसी कपोल कल्पनायें! भला सतियुग और त्रेता में दैत्य कहां और लड़ाई झगड़ा कहां.

ब्रह्मा कुमारी सुंदरी:- सखी क्या, ये जो भारत की नारियों को कहा जाता है कि, कैसा भी विषय विकारी, जुवारी, हरामी, शराबी, कबाबी पति हो, उसकी शेवा करने से अर्धांगी जी का उद्धार होता है, यह बात सत्य है?

ब्र.कु.मीरां:- नहीं, बिल्कुल ही झूठ. ये नास्तक, विकारी, वेदवादी विद्वान, पण्डित, आचार्यों का अपने उदर पूर्णार्थ स्त्री जाति प्रति सरासर अनर्थ दिव्य दृष्टि द्वारा प्राप्त किया हुवा अनुभव और शास्त्र सिद्धान्त कहता है कि, निश्चय "अहम, ब्रह्म, अस्मि" ज्ञान बिगर जीवन मुक्त अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती. जहां विषय ज़हर की रिश्वक मात्र भी लेन देन है, वहां ब्रह्मज्ञान रिश्वक मात्र नहीं. पिता श्री गीता आधर प्रजापति ब्रह्मा स्पष्ट कहता है कि, हे वत्स, यह काम इस ज्ञान स्वरूप मनुष्य का महावैरी है.

"विकारी विनाशी विषय ज़हर दाता,
अपने साथ जन्म जन्मान्तर जहिन्नम वा दोज़ख ले जाता"
"निर्विकारी अविनाशी ज्ञान अमृत दाता, दिव्य चक्षु विधाता,
अपने साथ ब्रह्मपुरी ले जाता".

ब्र.कु. सुन्दरी:- प्रिय सखी, इस अविनाशी ज्ञान यज्ञ द्वारा आश्चर्यवत, दिव्य दीदार पश्यन्ति, अविनाशी ज्ञान सुनन्ति, ग्रहण करन्ति, कथन्ति फ़िर भी आगन्ति क्यों?

ब्र.कु. मीरां:- (मुस्कुराती हुई) "अहो मम माया" "अहम ब्रह्मा अस्मि" में दृढ़ बुद्धियोग न होने वाले को माया चलायमान कर देती है।

डिवाईन शेवा में,
अविनाशी ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता,
डिवाईन फ़ादर गीता आधर "प्रजापति ब्रह्मा कुमारियां"